**(पहाड़ी कोठार से)**

# रिजुम हाअ्-रिमा हाअ्

**(तांग्सा लोक-कथा)**

**रेमोन लोंग्कु**

युगों पहले की बात है। अरुणाचल प्रदेश के चांग्लांग जिला और बर्मा सीमा के आस-पास रिजुम हाअ्-रिमा हाअ् दो पर्वत थे। इसका प्राकृतिक सौंदर्य दूर-दूर तक प्रसिद्ध था। इन दोनों पर्वतों के बीच एक गाँव हुआ करता था। उस गाँव के लोग बहुत ही खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहे थे। सिवाय ! एक दादी और पोती के। वे बहुत ही गरीब थीं। पोती विकलांग और दादी बहुत ही वृद्ध थीं। गाँव के लोग उन दोनों को ख़ूब चिढ़ाते थे। किसी त्यौहार या उत्सव में भी लोग अपने घरों में उन्हें प्रवेश तक नहीं करने देते थे। जब दादी और पोती कहीं टहलती हुई दिख जाती, तो गाँव के बच्चे उन्हें खूब चिढ़ाते और विकलांग पोती की नक़ल करते हुए हँसी उड़ाते थे। बच्चों के चिढ़ाने से पोती रोने लगती और लाचार बूढ़ी दादी हाथ में पकड़ी डंडा उठायें उन्हें भगाती थी। एक दिन गाँव के लोगों ने एक विशाल मछली का शिकार किया। कहा जाता है कि, वो मछली कोई साधारण नहीं थी ! वो एक प्रकृति की रक्षक थी। उस मछली को काटकर मांस को सबके घरों में बाँटा गया, किंतु उन लोगों ने दादी और पोती को नहीं दिया। उस शाम पूरे गाँव में उस शिकार के मिलने से लोग उत्सव मना रहे थे। मनुष्य से लेकर पालतू जानवर भी उस दिन मछली के मांस को खाकर आनंदित थे। किंतु दादी और पोती भूखी-प्यासी अपने घर पर सो रही थीं। सुबह होते ही दादी और पोती गाँव से कहीं दूर चली जाती हैं। शाम को दोनों जब गाँव वापस लौटती हैं, तो उन्होंने देखा कि, जहाँ उनका गाँव हुआ करता था वहाँ अब गाँव नहीं, झील थी। यह देखकर दादी और पोती खूब रोने लगीं कि, उनका गाँव झील के अंदर समा गया है। बूढ़ी दादी के हाथ में बाँस का एक डंडा था। उन्होंने निराश होकर उस डंडे को झील के किनारे गाड़ दिया और अपने गाँव को स्मरण करती हुई कहने लगीं- "रिजुम हाअ्... रिमा हाअ्...!!!"। मान्यता है कि, वे बाँस आज भी निरंतर गति से उग रहे हैं।

कुछ लोगों का कहना है कि, गाँव की यह दुर्दशा उस विशाल मछली का शिकार करने के कारण हुई और कुछ लोगों का यह भी मानना है कि, दादी और पोती को मछली का मांस नहीं देने के कारण यह हुआ।

अत: तांग्सा आदिवासी समुदाय आज भी यह लोक विश्वास रखते हैं कि शिकार करने की भी एक सीमा और नियम होते हैं। यदि उस सीमा और नियम का उल्लंघन करते हैं तो प्रकृति जिन्हें वे पुरखा मानते हैं, वह उन्हें हानि भी पहुँचा सकती है। इसके अतिरिक्त तांग्सा समाज के शिकारी आज भी वन द्वारा प्राप्त शिकार को गाँव के सबके घरों में बाँटते हैं, वे अकेले नहीं खाते। इस परंपरा को वे 'साअ्सेंग' कहते हैं। यह झील आज भी अरुणाचल प्रदेश के चांगलांग जिला के नाम्पोंग गाँव में स्थित है जिसे आज 'लेक ऑफ़ नो रिटर्न' के नाम से जाना जाता है।

इस लोक कथा का दर्शन है कि प्रकृति द्वारा प्राप्त वस्तुएँ सबके लिए बराबर होती हैं और उसी में एकता है। दूसरी बात, हम प्रकृति से जो चाहें ले सकते हैं और प्रकृति देती भी है किंतु यदि हम प्रकृति की वस्तुओं को अनावश्यक या अत्यधिक रूप से लेने का प्रयत्न करते हैं तो प्रकृति विकराल रूप भी धर सकती है। कहने का अभिप्राय है, प्रकृति एक संतुलन बनाये चलती है और यदि हम मनुष्य उसके संगठित संतुलन पर अतिक्रमण करते हैं, तो प्रकृति उस अतिक्रमण को रोकने की चेष्टा करती है।

*(**लेखकीय परिचय :** रेमोन लोंग्कु वर्तमान में उत्तर-पूर्व पर्वतीय विश्वविद्यालय, मेघालय के हिंदी विभाग में शोधार्थी हैं।*
*मोबा:7086433304, ई-मेल : remonlongku1@gmail.com )*